P4/L#2 बहुत गए थोड़े रहे। 4980 वर्ष बीत गये। (36) 24-11-67

पिता श्री ओमशान्ति 24-11-67

रिकार्ड: बदल जाये दुनिया - ओमशान्ति। किसने कहा। कसम किसका और किसने कहा। बच्चे रेसपान्ड करेंगे हम आत्माओं ने कहा। किसके लिए कहा? परम पिता परमात्मा के लिए कहा। क्या कहा? जब तक तुम्हारे शरीर में दम है, या जीता हूँ, हम प्रतिज्ञा करते हैं, हम जीते जी आप के ही याद में रहेंगे। यह भी बच्चे समझते हैं यह कोई इतना सहज नहीं है। जो अपन को सदैव आत्मा समझ और बाप को याद करते रहे। बड़ी डिफिकल्ट बात है। माया के तूफान भी बहुत लगते हैं। घड़ी2 बुद्धि का योग तोड़ देती हैं। इसके लिए भी बाप तो उपाय बहुत बतलाते रहते हैं। याद की यात्रा के लिए अपन पास डायरी रखो। अगर डायरी खाली होगी तो आत्मा को ख्याल रहेगा डायरी भरी नहीं है। इसमें घड़ी2 सावधानी चाहिए। बच्चों को एक ही बार समझाया जाता है। एक ही बार बाप का पार्ट बजता है। पतितों को पावन बनाने वा तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने लिए। पतित से पावन एक ही जन्म में बनते हैं। सीढ़ी उतरने में तो 84 जन्म लगती हैं। शुरु से लेकर कुछ न कुछ कला कम होती जाती है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने का डेरेक्शन मिलता ही नहीं है। डायरेक्शन अभी ही मिलता है। आत्मा सतोप्रधान बन जाती है। फिर आस्ते2 कुछ न कुछ कला कम होती जाती है। एक ही बार शिक्षा मिलती है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने। जब कि सतोप्रधान दुनिया में जाना है। फिर कला कैसे कम होती जाती है यह बच्चों को वहाँ मालूम नहीं पड़ता है। यह पता तब ही पड़ता है जब बाप आकर याद की यात्रा सिखलाते हैं। तुम बुलाते भी हो हे पतित पावन आकर पावन बनाओ। पतित-पावन सीता राम यह अक्षर तो साधु सन्त सब गाते रहते हैं। वह जानते नहीं कि हम पावन कैसे बनेंगे। सिर्फ गाते रहते हैं। गंगा घाट वा जमुना घाट पर जाके उनको पतित पावन समझ बैठ कर स्नान करते हैं। अभी तुम समझते हो गंगा स्नान से तो कोई पावन तो बन नहीं सकते। याद की यात्रा सिखाये और कोई पावन बनने का उपाय नहीं। यह भी तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं बच्चे अपन को आत्मा समझो। यह एक बात समझने की है। पूछते हैं तुम कैसे कहते हो कि शिव बाबा आते हैं। यह भी समझने की बात की जाती है। देखने की बात नहीं। वह तो कह देते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। फिर वह कैसे कहेंगे कि अपन को आत्मा समझो। आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार रहते हैं। यह कोई भी समझते नहीं। वह तो आत्मा निर्लेप कह देते हैं। बाप कितना सहज बताते हैं। जास्ती कुछ तकलीफ नहीं देते हैं। सेकन्ड में जीवन मुक्ति। बच्चे अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाकी लोग कहते हैं कल्प की आयु इतनी है, यह है, उनके [illegible] लिए फिर यह चित्र है। डिटेल में चित्रों से समझाया जाता है। हो सकता है और भी चित्र बनाने पड़े। आधा कल्प भक्ति चलती है, आधा कल्प है ज्ञान। तुम ही सतोप्रधान से सतो में आते हो। आत्मा में खाद पड़ती है। अभी तुम्हारा एम आबजेक्ट है नर से नारायण बनना। इसलिए इनको सत्यनारायण की कथा कहा जाता है। बाप ने समझाया है यह सब तो है भक्ति मार्ग। ज्ञान सिर्फ एक ही बाप के पास है। वह ही ज्ञान का सागर पवित्रता का सागर है। और कोई को भी ज्ञान का सागर-पवित्रता का सागर कह नहीं सकते। क्योंकि सभी 84 जन्म लेते2 पतित जरूर बनते हैं। किसको भी एवर प्योर नहीं कह सकते। यह बाप बातें बुद्धि में धारण करना है। बच्चे समझते हैं सतयुग में सतोप्रधान थे। फिर नीचे उतरते आये हैं। अब फिर सतोप्रधान कैसे बन सकेंगे। यह [illegible] भी बच्चों को लाना चाहिए। विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति अर्थात् कम पद पायेंगे। बाबा ने समझाया है यह अविनाशी ज्ञान है [illegible] विनाश नहीं हो सकता। थोड़ा भी सुनते हैं तो उनको पद जरूर मिलता है। इतने सभी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन होती है तो प्रजा भी चाहिए ना। ऐसे तो नहीं इतने ढेर प्रजा को [illegible] [illegible] कर्मातीत अवस्था में ले जायेंगे। [illegible] है। सब का अपना2 पुरुषार्थ है। अभी तुम बच्चे जानते [illegible]

[illegible] 21 अभी लिख [illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] [illegible] तुम लिखते [illegible] कोई को भी पता [illegible] यह तो ड्रामा के [illegible] अनुसार

अपना पार्ट है वह ब जाते रहते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार सभी मनुष्य पार्ट बजाते रहते हैं। सेकन्ड व मिनट जो पास होता है xxx, ड्रामा। जो सीन एक वार शुट हुई वह फिर हु बहु जरूर रिपीट होगी। सभी फिल्म शुट करते हैं। मक्खी उड़ गई। शुटींग में आ xxx गया तो जब2 वह फिल्म रिपीट होगा तो मक्खी भी जरूर ऐसे उड़ती दिखाई देगी। यह सब है हद की बातें। यह तो बेहद का ड्रामा है ना। बेहद का बाप ही ड्रामा के आद मध्य अन्त को जानते हैं। बाप ही सृष्टि का बीज रूप निराकार है। सत्य है। और चैतन्य है। चैतन्यता आत्मा लाती है ना। बाप को भी नालेज फुल विलिस फुल कहा जाता है। xxxसारे विश्व को रिपीट करते हैं। मनुष्य गाते तो हैं परन्तु सिर्फ कहने मात्र। जैसे नाम मात्र पूजा करते हैं। चोटी चढ़ाते हैं। जानते कुछ भी नहीं। यह कौन हैं, व इनका नाम रूप देश, काल क्या है कुछ भी ख्याल नहीं करते। बस सिर्फ कहते हैं भगवान है। और कोई कुछ नहीं जानते। इसको कहा जाता है अन्धश्रधा। बाप ने भी कहा है अंधे की औलाद अंधे। बाप को भी नहीं जानते। न किसी देवता को जानते हैं। न बेहद के बाप को जानते हैं। बाप को तो जानना चाहिए ना। इसलिए ही फार्म भराया जाता है। शरीर का बाप तो है। जैसे शरीर बड़ा है तो शरीर का बाप भी बड़ा है। लौकिक बाप तो बहुत बड़ा है ना। अच्छा आत्मा जो इस शरीर को चलाने वाली है इतनी छोटी आत्मा उनका बाप कौन? मुंझ पड़ते हैं। कहते हैं हम भाई2 हैं। जरूर आत्माओं का बाप परम पिता परमात्मा एक ही होगा। परन्तु समझते नहीं हैं। आजकल तो कह देते हैं आत्मा सो परमात्मा। तो फिर ब्रदर्स हुड हो जाता है। इसलिए मनुष्य मुंझ पड़ते हैं। फार्म भराया जाता है समझाने के लिए। बाप समझाते है दुनिया में तो अनेक प्रकार के मनुष्य हैं तरह तरह काल करते हैं। कैन्सर निकालना, xxयह करना। इसमें कोई भी फायदा नहीं। मनुष्य तो पुकारते हैं हे पतित पावन । हमको xxxआकर पावन बनाओ। क्योंकि आत्मा जानते हैं हम पावन बनने बिगर मुक्ति जीवन मुक्ति में जा नहीं सकते। इसलिए बुलाते हैं। कब से पतित xxxxहोते हैं जब रावण राज्य होता है। आधा आधा है। राम राज्य भी आधा। ईश्वरीय राज्य स्थापन किया हुआ भी आधा कल्प चलता है। ऐसे नहीं सिर्फ परमात्मा सर्वशक्तिवान है। समय पर फिर रावण भी सर्वशक्तिवान है। सब माया के गुलाम बनते जाते हैं। ईश्वर को बिलकुल ही जानते नहीं। अभी तुम्हारी बुधि में है बाबा हमको क्या सिखलाते हैं। साधु सन्त गुरु आद क्या सिखलाते हैं। रात दिन का फर्क है। कोई भी गुरु गोसाई नहीं जो xxx यह समझावे कि तुम आत्मा हो। तुम पहले सतोप्रधान थे। फिर 84 जन्म लिये। यह भी समझते हैं जिन्हो ने 84 जन्म लिये होंगे, पहले2 भक्ति शुरू की होगी वह ही यहां ठहर सकेंगे। भक्ति के हिसाब से तुम बच्चे आते हो। जिसने बहुत भक्ति की होगी वह ही बहुत अच्छी रीत पढ़ेंगे। कम भक्ति करने वाले कम पढ़ेंगे। जिसने बहुत भक्ति की होगी वह फटक पढ़ेंगे। कब भी पढ़ाई क्लास मिस न करेंगे। क्योंकि भक्ति का फल मिलता है ना। जिसने बहुत भक्ति की है xxxxउनको जरूर पहले मिलना चाहिए। इसने ही पहले2 सोमनाथ का मंदिर बनाया होगा। शिव ने ही सोमरस xxx पिलाया, ज्ञान योग सिखाया है। इसलिए इनका सोमनाथ नाम रख दिया है। कितने बड़े2 मंदिर बनाये है। सोमनाथ का मंदिर कितना हीरे जवाहरो से सजा हुआ था। अभी जो मंदिर है वह तो xxx जैसे वर्थ कौड़ी है। वह था वर्थ पाउन्ड। इस समय के मनुष्य भी वर्थ कौड़ी है। अभी तुम वर्थपाउन्ड बनते हो। गुरू में कितना धन था। पदार्थो की विधीयत थी। बाप कहते हैं मीठे बच्चो तुम पदमभाग्यशाली बनते हो। वहां अनगिनत धन रहता है। तुम गिनती कर नहीं सकेंगे। सोने जवाहरों के महल होते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे अभी यह मंदिर है नहीं तो हम कैसे मानेंगे। हिस्ट्री जागराफी तो पढ़ी है ना। हिस्ट्री अर्थात राज्य किसने किया। जागराफी माना कितने जमीन पर कितना xxx समय राज्य किया। दुनिया में कोई भी ऐसा सतसंग नहीं होगा जिसमें मनुष्य अपने को आत्मा समझ बाप को याद करे। अभी तुम सत बाप के संग में xx बैठे हो। तुमको सत्य है दूसरा कोई सिवाए सत बाप के समझा नहीं सकते हैं। xxx वर्तमान मनुष्य तो झूठ ही बोलते हैं। उनको कहा ही जाता है

फोन नं.................
त्रिमूर्ति श्री ... का मन्दिर
एवं आध्यात्मिक ... पाठशाला
ध्रुव तालाब रोड, ..., धार (म. प्र.)

विनाश काले विप्रीत बुधि। जो कुछ भी सुनाते हैं झूठ। ईश्वर सर्वव्यापी कहां लिखा हुआ हैं। मनुष्य नाम लेते हैं गीता का। गीता में तो भगवानुवाच है कि मैं बहुत जन्मों के भी अन्त में साधारण तन में प्रवेश करता हूं। तो फिर सर्वव्यापी हूं यह कैसे कहेंगे। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। अन्दर में जानते हो हम आत्माओं को शिव बाबा x नालेज दे रहे हैं। यह xxxx कथा नहीं हैं। यह तो नालेज हैं। बाकि बच्चों को बैठ समझाता हूं कि तुमxकि पतित से पावन कैसे बनो। आगे बने थे। 5000 वर्ष पहले भी तुम पतित थे। मैं ने तुमको रास्ता बताया था पावन होने का। कल्प पहले भी बताया था। ऐसे कोई मनुष्य को तो कहने आवेगा नहीं। बाप ही कहते हैं बच्चे हम ने तुमको राजयोग सिखाया था जिस से xxxxx राजधानी स्थापन हुई थी। यह हैं सच्ची। वह x झूठी सत्यनारायण की कथा xx बैठ सुनाते हैं। नाम रखा हैं सत्य नारायण की कथा। भारत में कथाएं भी मशहूर हैं। सत्य नारायण की कथा। अर्थात नर से नारायण बनने की कथा। पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण की कथा सुनाते हैं। वह यह नहीं समझते कि हम यह xxxx कथा सुनने से नर से नारायण बनेंगे। नहीं। तो वह झूठ हुआ ना। अमरनाथ की कथा कौन सी हैं, जो तुमको सुनातेxहैं। सुनाते हैं। वह तो कथा 2 सुनाते देते हैं। पहाड़ी पर शु शंकर ने अमर कथा पार्वती को सुनाई। अभी तुम इन बातों x को समझते हो। बरोबर यह मृत्युलोक हैं। हमको बाप अमरलोक की कथा सुनाते हैं। शास्त्रों में तो भक्ति मार्ग की कथाएं लिख दी हैं। यह भी होना हैं। आधा कल्प यह कथा सुनते चित्र बनाते आये हैं। तुम बच्चों को स्मृति में आया हैं। कैसे हम पहले या मार्ग में x जाते हैं। पहले2 अव्यभिचारी पूजा शुरु होती हैं। शास्त्रों में तो झूठी दन्तकथाएं लिख दी हैं। अभी अमरनाथ सूक्ष्म वतन में रहने वाला वह फिर पहाड़ी पर कहां से आवेगा। भला एक पार्वती को कथा सुनाई क्या। बाप कहते हैं तुम सब पार्वतियां हो। जैसे गंगा को पतित पावनी कहते हैं परन्तु स्नान तो और भी नदियों पर जा कर करते हैं। वैसे पार्वतियां और भी तो होंगी ना। जो कथा सुनती होंगी। मनुष्य तो जो सुनते हैं सत्य कहते रहते हैं। बाप समझाते हैं यह आधा कल्प वेद शास्त्र तीर्थ आद चलती हैं। इन गीता आद शास्त्र पढ़ने से मैं को प्राप्त नहीं करते। यह समझते हैं हम भगवान पास पहुंच जावेंगे। यह सब रास्ता भगवान से मिलने के हैं। बाप कहते हैं भक्ति तो दुर्गति है। इसलिए xxxx सीढ़ी भी बनाई हैं। मनुष्यों को सहज समझ में आ जावे। कैसे उतरती कला होती हैं। चढ़ती कला को नई दुनिया कहा जाता हैं। उतरती कला xxx माना पुरानी दुनिया। यह तो कामन बात हैं। यह जो बाप बैठ समझाते हैं एक भी बात कोई की बुद्धि में नहीं हैं। यह हैं ही भक्ति मार्ग, यह है ज्ञान मार्ग। अभी ज्ञान मार्ग जिन्दाबाद होता हैं। इस पढ़ाई में भी कितनी डिफीकल्टी आती हैं। चलते2 गिर पड़ते हैं। चोट खा लेते हैं। पहले होती हैं देहाभिमान की चोट। फिर काम की चोट। जब तक ब्राह्मण न बने हैं तो शुद्र ही हैं। रावण सम्प्रदाय के हैं। इस समय तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय के बनते हो। तुम बनेंगे दैवी सम्प्रदाय। उत्तम कौन सा जन्म ठहरा। यह ठहरा ना। इसको ही अन्तिम दुर्लभ जीवन कहा जाता हैं। यह हैं पुरुषोत्तम संगम युग, जब कि तुम कनिष्ठ से उत्तम बनते हो। तुम समझते हो हम कनिष्ट वर्थ नाट अपेनी थे। और कोई मनुष्य अपन को ऐसे समझते थोड़े ही हैं। वह पाउन्ड बनने वाले ही नहीं हैं। तो समझेंगे फिर क्या। किसको कुछ भी पता नहीं हैं। अभी तुम समझते हो कल हम नीच थे। अभी हम उंच बनते हैं। तुच्छ बुद्धि से स्वच्छ बुद्धि बन रहे हैं। कल बेसमझ थे आज समझदार बनते हैं। तुम्हारी एमआबजेक्ट सामने खड़ी हैं। यह बैज तो सदैव साथ रहना चाहिए। यहां पहनो चाहे पाकेट में रखो फिर घड़ी2 देखो हम यह बन रहे हैं। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। याद की यात्रा बहुत सहज हैं। यह है रूहानी यात्रा। वह हैं जिस्मानी यात्राएं भटकने की। इसमें तो शान्त रहना होता हैं। खाते-पीते कुछ कुछ करते सिर्फ अपन को आत्मा समझो। आत्मा खाती हैं इन आरगन्स द्वारा। आत्मा को स्वाद आता हैं। आत्मा अलग हो जाती हैं तो कुछ भी पता नहीं रहता। आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार होते हैं। जिस अनुसार फिर जन्म लेती हैं।

फोन नं...............
त्रिमूर्ति श्री ... का मन्दिर
एवं आध्यात्मिक ... ना पाठशाला
धुब तालाब रोड़, ..., धार (म. प्र.)

(1980) #2 — पितृवार 24-11-67

है। कोई धन दान करते हैं तो भी अल्प काल लिए रिटर्न में मिलता है। यहाँ तुम इकबालदानी बनते हो। विनाशी धन भी तो अविनाशी धन भी दान करते हो। यह अविनाशी ज्ञान का एक एक अक्षर लाखों रुपये का है। भक्ति मार्ग में तो जो शास्त्र आदि बैठ सुनाते हैं उनकी आमदनी होती है। नौमिक धोड़े‍ से कुछ मिलता है। गीताज्ञान के लिए पहले तो पतित से पावन बनना है। तुम बच्चे अभी इस ड्रामा के आदि मध्य अन्त और डिस्ट्रक्शन को जानते हो। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। हो आज पल कहते रहते हैं यह जहाँ भारत लड़ाई है 5000 वर्ष पहले हुई थी। तो भी कम कम मनुष्यों के अक्षर निकलते हैं। आकिती गपोड़े भी बहुत मारते रहते। तुम कहते हो 9 वर्ष बाद विनाश होगा। यह कोई उनकी बुद्धि में बैठता नहीं है। कौन मरेंगे, कौन जीवेंगे, सब खत्म हो जावेंगे वा क्या यह किसको पता थोड़े ही है। सांपस घमन्डी बनाते हैं यह तो अपने ही कुल का विनाश करने बनाई है। यह तो डिसट्राय कर देना चाहिए। परन्तु ऐसे थोड़े ही हो सकता है। पदमों रुपये खर्च कर फिर डुबोते कैसे देंगे। बाप कहते हैं यह विनाश्वाला यह है जो 5000 वर्ष पहले भी हुई थी। एक धर्म की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश होना ही है। तुम स्थापना कर रहे हो। तुम हो इनकागनिटो वारियर्स। तुम विश्व के मालिक बनेंगे। कोई समझ सकेंगे? तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। जो अच्छी रीत समझते वाले होंगे उनको नशा चढ़ेगा हम योगबल से अपनी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। याद हो तो खुशी में रहें। भूल जाते हैं तो जैसे शूद्र बन जाते हैं। याद में रहते हैं तो ब्राह्मण हैं। तुम्हारा लंगर अब उठा हुआ है। तुम बहुत नजदीक आये पहुँचे हो। कलियुग के बाद सतयुग आवेगा जरा। यह है छोटा सा पुरुषोत्तम संगम युग। सबसे छोटे ब्राह्मण की 100 वर्ष आयु भी जाती है। इसमें समय लग जाता है। ... दूसरा बन जाते हैं। ... बहुतिवार है। तुम्हारा परिवार कितना छोटा है। चोटी छोटी होती है ना। ... बड़ा दोटा रखते हैं। तुम्हारा गायन है गऊ के खुर जैसी चोटी। आजकल चोटी रखते नहीं हैं। आगे यह निशानी थी। एक तो चोटी दूसरा जनेऊ। अब दोनों नहीं हैं। दिन प्रति दिन निशानियाँ भी गुम होते जाते हैं। वेजीटेरियन कान्फ्रेन्स लिए भी बाबा ने समझाया था यह है सिंगल वेजीटेरियन तुम हो डबल। दुनिया में वेजीटेरियन तो बहुत हैं। तुम डबल वेजीटेरियन बनते हो। नानक ने भी कहा है अनेक चोर .... उनको भी गुरु भी कह नहीं सकते। गुरु वह जो सद्गति करे। वह तो दुर्गति करते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम सब की सद्गति करता हूँ। फिर दुर्गति और कौन करते हैं? साधु संत, ऋषि-मुनि आदि जो कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। तो बेमुख किया ना। यह सब बातें धारण करनी हैं। औरों को समझाना है। बोलो तुम आत्मा हो। तुम्हारा बेहद का बाप निराकार है। वही पतित पावन है। वह बाप कहते हैं देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो। यह बाप के डायरेक्शन हैं। इन पर अगर न चलते हो तो नाफरमानबरदार कहेंगे ना। बाप की आज्ञा नहीं मानते। बाबा याद में भी तूफान आते हैं। पढ़ाई में तकलीफ होता है जो पढ़ते नहीं। यह तो रोज पढ़ना चाहिए। नहीं तो धारणा कैसे होगी। भगवान पढ़ाते हैं ना। भगवानुवाच मन्मनाभव। याद से ही पद ऊँचा बनता है। पुरुषार्थ करते रहो तो तुम ऊंच जायेंगे। नहीं तो प्रजा पद पायेंगे। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। कितना नुकसान हो जायेगा। इस पर ध्यान देना है। शिव बाबा पुत्र आत्माओं से बैठ बात करते हैं। वह तो कह देते हैं ईश्वर का ... है। ड्रामा अनुसार जिसको जो पार्ट मिला हुआ है वही बजावेंगे। दूसरा कोई ... न होगा। ... को भी अपना पार्ट मिला हुआ है। पार्ट चेंज नहीं हो सकता। ... अपना पार्ट बजाते हैं। ... मुरली ... देते रहते हैं। पर यह ड्रामा एक दिन चेंज हो जाता है। बाप कहते हैं ... तुम बच्चों को मिलते गये। 4980 वर्ष पास हो गये। ... आत्मा को अपना स्वधर्म याद करने से तुम ... फिर ... बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद प्यार, गुडमार्निंग और नमस्ते।